

जल जंगल और जनमानस



जल जंगल से जनमानस है
जनमानस से जल और जंगल
मधुर रहे संबंध अगर तो
होगा फिर जनजन का मंगल
सागर से उठ बादल बन
संपूर्ण देश में जल बरसाता
ताल, तलैया नदियों को
बिना भेदभाव सबको भर जाता
जुड़ा जाती है कब की प्यासी धरती
ठंडी होकर सुख पाती है जलती धरती
तपता पहाड़ झरना बन झरने लगता
पत्थर कठोर पिघल अमृत झरने लगता
पोरपोर उग आती हरियाली पहाड़ में
नई जवानी उमंग जग जाती पहाड़ में
सन्नाटा पसरा होता जून जेट में
झूम झूम उठती हरियाली
चाहे चूमना बादल को आभार सहित
उमंग उमंग हरियाली

जल अमृत है समझो इसको
और इसे पहचानो जन मानस तुम
पानी है अनमोल न इसको भूलो
दिल से गांठ बांध लो जन मानस तुम
बूंद बूंद की कीमत है जैसे मोती
इसे बनाए रखो
बेकार न बहने पाए जानो
इसे बचाए रखो
पानी का पानी रखो सम्हाले
इसके बिना सब सून
मर जाते सब बिना वजूद के
जैसे मोती, मानुस, चून
जल देता है चहुं ओर पहुंचकर
हरित क्रांति का नव संदेश
सूखा जंगल खिल उठता है
धर नूतन हरियाली-भेष
नव यौवना स्वागत करती मन ही मन
अनुपम सिंगार कर प्रियतम का

केश घटा सी सतरंगी चूनर लहराए
स्वप्निल पलकों में सपना प्रियतम का
जन मानस क्यों निष्ठुर होकर
जल जंगल का करता नाश
भूल रहे हम उसको ही क्यों जो
करता सब जीवों का पोषण और विकास
जल जंगल का हो संरक्षण निधि अमूल्य है
हो मनोभाव बलवान
वर्ना विनाश की लीला नृत्य करेगी
ताण्डव होगा नहीं होगा कल्याण
पलते कितने जीव जंतु हैं जल जंगल से
हम सबकी यह थाती
तभी सभी आनंदित होंगे समृद्ध बनेंगे
होगी खुशियों से चौड़ी छाती
जल ही से फसलें लहलह करती
दाने दाने मे भंडार भरे
क्षुधा तृप्त हो भूख मिटे सब जीवों की
आओ मिलकर हम जयकार करें
जंगल साथी प्यारा अपना औषधि, फल दे
और लकड़ियां कितने ही सामान
नहीं सजग अब भी हम होंगे
जग सारा हो जाएगा शमसान
कहने को बाकी बहुत अभी हैं कितनी बातें
करो नहीं अपराध नहीं हो दंगल
हे जन मानस ! सावधान हो सावधान !
अब से चेतो वर्ना होगा
पग-पग पर बस दुःखद अमंगल
अस्तु.....
जल जंगल से जनमानस है
जनमानस से जल और जंगल



संपर्क करें :

डॉ. दयानाथ सिंह "शरद"
अभयना, मंगारी,
वाराणसी - 221202-उ.प्र.